© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 2 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

निराला के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श

सीतू मिश्रा,
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग,
हेमवती नन्दन बहुगणा राजकीय महाविद्यालय,
इलाहाबाद, उत्तर प्रेदश, भारत।

शोध आलेख सार – ''बहुआयामी प्रतिभा के धनी 'निराला' से हिन्दी साहित्य का संसार पूर्णतः परिचित है। वे छायावाद के संधानक, प्रगतिवाद के समर्थक तथा मानवतवाद के पोषक थे। एक महान कवि होने के साथ–साथ वे एक सफल कथाकार भी थे और सच्चे अर्थों में तो वे मानवीय संवेदना के लेखक थे। 'निराला' के काव्य संग्रह, उपन्यास कहानियों आदि सभी में उनकी मानवीय भावना निरन्तर अनुप्राणित होती दिखती है।''[7] निराला का फुटकर कविता, कविता संग्रह, उपन्यास, कहानियाँ आदि उनकी नवीन शिल्प क्षमता और उनकी बोधगम्यता की परिचायक है।'' इनमें गहराई पर बैठने वाली क्षमता है जो मानव के अंदर संवेदना जागृत करती है और किसी लेखक की रचना की उत्कृष्ठता उसके संवेदनात्मक भाव से ही आँकी जाती हैं। इन अर्थों में निराला की रचनाएँ साहित्यरूपी सागर में चन्द्रमणी के समान है।

मुख्य शब्द– निराला, हिन्दी साहित्य, कथा साहित्य, स्त्री, स्वाधीनता, स्वालम्बन।

स्त्री स्वाधीनता और स्वालम्बन का समर्थन 'निराला' ने भी किया है। उनकी कहानियों के स्त्री पात्र उनकी इसी भावना का पोषण करते हैं। 'बाहरी स्वाधीतना और स्त्रियाँ' नामक अपने लेख में निराला ने स्त्रियों को पुरुष के समान अधिकारिणी माना है। वे वह भी कहते हैं कि स्त्रियों को दबा कर रखने में विश्व कल्याण की कामना करने वाले निरा मूर्ख है जो ये नहीं समझते कि उन्हें वायु की तरह मुक्त रखने में ही कल्याण है।

''निराला'' के विचारानुरूप ही उनकी कहानियों में स्त्रियाँ पूर्णतः स्वाधीन और स्वतंत्र हैं। इस सन्दर्भ में भी स्त्रियों के प्रति उनका दृष्टिकोण कारुणिक या द्रवित न होकर सम्मानित और संवेदनशील रहा है। स्त्रियों की समस्याओं से जुड़ी कथाओं का समाधान उन्होंने अपने ढंग से प्रस्तुत किया, जहाँ प्रेमचन्द का सुधारवादी दृष्टिकोण विधवाओं या वेश्याओं की समस्या का समाधान आश्रम की सीमा पर समाप्त होता है, वहीं निराला ने व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत किया है।''[1] इस सम्बन्ध में कुछ लेखकों ने 'निराला' और 'उग्र' के व्यावहारिक सामाजिक समाधानों की सभ्यता को स्पष्ट किया है। 'उग्र' अैर शराबी' का नायक मानिक लाल वेश्या जवाहर से विवाह करके सामाजिक मान्यताओं को धत्ता बताता हुआ वैयक्तिक भावना को पोषित करता है।

निराला की कहानियों में स्त्रियों के विविध चरित्र दृष्टिगत होते हैं। ये स्त्री चरित्र आत्मभिमानी, विद्रोही, साहसी, निडर, अपने अधिकारों के प्रति जागरूक शिक्षित या शिक्षा को महत्व देने वाले तथा संकीर्ण मानसिकता को तोड़ने वाले

हैं। 'श्यामा' कहानी की नायिका श्यामा जाति से लोध और बाल विधवा है। उसके मन में जातिगत संकीर्णता के प्रति विद्रोह का भाव है और यह विद्रोह तब और बढ़ जाता है जब नायक बंकिम उच्चकुलीन ब्राह्मण पुत्र होते हुए भी उसके आगे विवाह का प्रस्ताव रखता है। श्यामा जातिगत अत्याचार, पीड़ा, दर्द को अपनी आँखों से देख चुकी है, उसके पिता को कर्ज न चुका पाने की कीमत जान गवाँ कर अदा करनी पड़ती है। श्यामा का हृदय छलनी हो जाता है। जब उसके सगे सम्बन्धी भी उसका साथ छोड़ देते हैं। जाति के इन बन्धनों से मुँह चिढ़ाती हुई श्यामा बंकिम के साथ चली जाती है और न सिर्फ उससे विवाह करती है बल्कि पग–पग पर उसके प्रयासों को सफल होने में मदद करती है। आर्थिक, सामाकि, भौतिक तथा मानसिक हर संभव प्रयास करके श्यामा बंकिम को ऊँचाईयों तक पहुँचाने में उसकी मद्दगार साबित होती है।

''निराला की इन स्त्री चरित्र प्रधान कहानियों में हमें स्त्री जीवन की विविध छवियों को झलक मिलती है। गहनता से विचार करें तो हर एक पात्र हमारे ही बीच का है जिससे हमें आत्मबल मिलता है। हालाकि 'निराला' ने स्वाधीनता संघर्ष से सम्बन्धित कहानियाँ नहीं लिखी हैं, और न राष्ट्रसेवा या राष्ट्रप्रेम को जगाने वाले किसी चरित्र का निर्माण किया।''[2] इसके मूल में उनकी राजनैतिक उदासीनता, तटस्थता को माना जाता है। फिर भी यह निश्चित रूप से कह सकते हैं कि निराला ने स्त्री को आत्मसम्मान, गौरव, आत्मबल से जीने की राह दिखायी। उन्होंने स्त्रियों को खड़े होना सिखाया, संघर्ष करना सिखाया; मजबूत बनना सिखाया और आत्मसम्मान से जीना सिखाया। ये सिर्फ 'निराला' ही कर सकते थे क्योंकि वे सही मायने में सबसे 'निराले' थे और उनका लेखन भी 'निराला' है।

इस प्रकार का बौद्धिक विमर्श और आदर्शवादी समाधान 'निराला' की स्त्रियों में ही देखने को मिलता है। ''निराला'' की नारियाँ प्रबुद्ध भी हैं और प्रगतिशील भी हैं। उनके विचारों में स्वच्छदंता है, भावों की स्वतंत्रता है और स्फुटन प्रवणता है। ''श्रीमती गजानंद शास्त्रिणी एक ऐसी कहानी है जिसमें नायिका के स्वच्छंद प्रेम की स्पष्ट व्याख्या की गई है।''[3] इस कहानी की नायिका भी नायक मोहन की समाज भीरुता, धर्म भीरुता की खिल्ली उड़ाती है क्योंकि मोहन की कायरता से क्रुद्ध होकर ही वह एक अधेड़ से विवाह करके स्वयं ही अपना जीवन नाटकीय बना देती है। लेकिन अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देती हुई स्वयं एक मिसाल कायम करती है, और स्त्रियों के लिए आदर्श स्थापित करती है।

निराला की कहानियों में जातिगत, धर्मगत, वर्णगत, वर्गगत आदि सभी सामाजिक बन्धनों के प्रति घोर विरोध स्पष्टतः परिलक्षित होता है। वे जाति प्रथा, धार्मिक वितण्डवाद को कदापि स्वीकार नहीं करते थे। यही कारण है कि उनकी कहानियों में स्त्रियाँ भी जातिगत बंधनों को नकारती हुई प्रेम विवाह करती हैं, और स्वतंत्र रूप से जीवन निर्वाह करती है। 'सुकुल की बीबी' कहानी में नायिका मुस्लिम स्त्री है किन्तु जिस साहस और धैर्य के साथ वह ब्राह्मण सुकुल को विवाह करके धर्मगत बंधनों को झुठलाती है वह वास्तव में आन्दोलित कर देने वाला है। उस समय 'निराला' ने एक स्त्री के माध्यम से अर्न्तधार्मिक विवाह कर लेने का जो साहस दिखाया था वह सहज नहीं था बल्कि यह सोच एक प्रश्न उठाती है कि कब तक समाज इन रुढ़ियों की बेड़ी में जकड़ा हुआ आहें भरता रहेगा? कोई तो होगा जो इन रूढ़ियों

के बंधन से समाज को मुक्त कर खुलकर साँस लेने का मौका देगा। इस संदर्भ में 'निराला' ने यह साबित कर दिया है कि स्त्री व्यक्ति और साहस किसी भी कार्य को करने में सक्षम है, जरूरत है तो बस जागरूक होने की।

हालाकि साहित्य में अधिकतर 'निराला' एक विद्रोही, दार्शनिक, जनकवि के रूप में ही याद किये जाते हैं। उनके कथा साहित्य पर कम ही लोगों की दृष्टि गयी है। लेकिन इनका कथा साहित्य संख्या की दृष्टि से भले ही कम हो किन्तु विषय विविधता एवं समष्टि बोध से भरपूर मानव जीवन की कलात्मकता को जाग्रत करने में पूर्णतः समर्थ है। निराला के कथा साहित्य पर बहुत कुछ प्रभाव प्रेमचन्दयुगीन आदर्शवाद का भी परिलक्षित होता है। उनके चरित्र समाज को एक दिशा देने के लिए प्रवृत्तियों के परिवर्तन से भी नहीं हिचकते। कभी–कभी यह परिवर्तन अस्वाभाविक लगता है। पर समाज का आदर्श और यथार्थ का अलग–अलग बोध कराना भी जरूरी है, जहाँ कहीं आदर्शवादिता से किसी समाधान की आवश्यकता महसूस हुई वहाँ भावना प्रस्फुटन के लिए पात्रों को नया कलेवर देने में निराला के कंजूसी नहीं की।

''निराला की अर्थ स्त्री चरित्र प्रधान कहानियों में 'कमला', 'देवी', 'सखी', 'दो दाने' आदि उल्लेखनीय हैं। 'कमला' कहानी की नायिका पुरूषों की दकियानुसी मानसिकता का शिकार होती है लेकिन अपने उदात्त गुणों से वह नायक पं0 रमाशंकर और उनके घर वालों को क्षमा नहीं करती वरन् अपने भाई के लिए अपनी ननद का रिश्ता भी स्वीकार लेती है। यह आदर्श नारी की यथास्थिति है।''[4]

'देवी' कहानी की वह स्त्री है जो कथित तौर पर 'पगली' कही जाती हैं, दुनिया के झूठ–प्रपंच, माया–मोह की सच्चाई अपने बंद होठों से भी बयाँ कर जाती है। इसी प्रकार 'सखी' कहानी की नायिका लीला और उसकी सहेली जोत प्रेम तरंग के एक नये रूप का रहस्योद्घाटन करती हैं। जिसमें त्याग है, तो समर्पण भी है।

'दो दाने' कहानी जिजीविषा के प्रबलता और दाँस्ता बयाँ करती है। नायिका अपने परिवार के भरण–पोषण के लिए वेश्यावृत्ति अपनाने पर मजबूर हो जाती है वह समर्पण नहीं करती बल्कि आत्मोत्सर्ग करती है।

'प्रेमपूर्ण तरंग' निराला की पत्रोतर में लिखी गयी कहानी है जिसमें किशोरावस्था से पनपे प्रेमांकुर का प्रस्फुटन युवावस्था की दहलीज पर होता है। यह निराला की एक ऐसी कहानी है, जिसमें प्रेम, स्नेह और निकटता के उन्माद का स्वर मिश्रित है।''[5]

आदर्श और यथार्थ को नया दृष्टिकोण देने वाले निराला कभी रूढ़ियों और अंधविश्वासों के समर्थक नहीं रहे। अपनी कुछ कहानियों यथा 'लिली', 'ज्योतिर्मया' में उन्होंने धार्मिक रूढ़ियों का खुलकर विरोध किया है। उनकी व्यंग्य क्षमता बड़ी प्रखर थी। तीखे व्यंग्यबाण कसने में निराला दक्षा हैं। कुछ आलोचक धूमिल की व्यंग्यात्मक रचनाओं को निराला के व्यंग्य भाव से जोड़कर देखते हैं। पर धूमिल के व्यंग्य में आक्रोश और विद्रोह अधिक है। जबकि निराला ने जब–जब व्यंग्यात्मक शैली को बात से स्पष्ट करने का प्रयास किया उन्होंने भाषा के पैनेपन और भावों की धार से प्रहार किया, जिसके आगे कोई टिक नहीं सका। निराला के कथन शैली में एक ऐसी शक्ति है, जो दिलों दिमाग पर चोट करती है, बात साधारण होती है पर उसके कहने के दंग में कैसा व्यंग्य व्याप्त हो जाता है, यह उनकी कहानियों में देखा जा सकता है। निराला के काव्य के साथ–साथ कथा साहित्य में भी स्त्री अत्यंत महत्वपूर्ण विषय रही है। ''उपन्यासों और कहानियों में स्त्री जीवन से सम्बन्धित समस्याओं पर विचार किया गया है। निराला की अधिकांश कहानियों के

शीर्षक भी स्त्री प्रधान हैं और उनके स्त्री पात्रों के इर्द–गिर्द ही कथानक का ताना–बाना बुना गया है।''[9] ऐसा प्रतीत होता है कि निराला का उदार एवं उदात्त व्यक्तित्व तथा तद्युगीन परिस्थितियाँ स्त्री प्रधान कहानियों के लेखन में विशेष कारण रही। मार्क्सवाद का प्रभाव तो 'निराला' पर था ही साथ–साथ उस समय के सुधारवादी आंदोलनों, गाँधीवादी दर्शन और इन सबसे बढ़कर यह है कि प्रत्येक क्षेत्र में स्त्रियों की सक्रिय सहभागिता ने भी उन्हें अभिभूत किया हैं उस समय के महान नायकों की सशक्त भूमिका एवं कर्मठता के फलस्वरूप बाल विवाह, सती प्रथा, बहु विवाह, पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा तथा वेश्यावृत्ति पर बहुत हद तक नियंत्रण पाया जा सका तथा विधवा पुनर्विवाह, अर्न्तजातीय विवाह तथा स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहित किया गया। इन भगीरथ प्रयासों में आर्य समाज, ब्रह्म समाज, थियोसोफिकल सोसायटी आदि सामाजिक संस्थाओं एवं गाँधी जी, राजा, राम मोहन राय, विलियम बैटिंक, एनी बेसेन्ट, सरोजनी नायडू, सावित्री देवी आदि समाज सुधारकों का विशेष एवं अतुलनीय योगदान सन्निहित है। इन वीर नायकों के स्तुत्य प्रयासों से ही समाज में स्त्री को उसका स्थान प्राप्त हुआ अब वह पहले की तरह उपेक्षणीय नहीं रही अपितु पुरुष के समकक्ष ही उसे भी अधिकार प्राप्त हुए, स्त्री अस्तित्व को नयी पहचान मिली।

''बहुआयामी प्रतिभा के धनी 'निराला' से हिन्दी साहित्य का संसार पूर्णतः परिचित है। वे छायावाद के संधानक, प्रगतिवाद के समर्थक तथा मानवतवाद के पोषक थे। एक महान कवि होने के साथ–साथ वे एक सफल कथाकार भी थे और सच्चे अर्थों में तो वे मानवीय संवेदना के लेखक थे। 'निराला' के काव्य संग्रह, उपन्यास कहानियों आदि सभी में उनकी मानवीय भावना निरन्तर अनुप्राणित होती दिखती है।''[7] निराला का फुटकर कविता, कविता संग्रह, उपन्यास, कहानियाँ आदि उनकी नवीन शिल्प क्षमता और उनकी बोधगम्यता की परिचायक है।'' इनमें गहराई पर बैठने वाली क्षमता है जो मानव के अंदर संवेदना जागृत करती है और किसी लेखक की रचना की उत्कृष्ठता उसके संवेदनात्मक भाव से ही आँकी जाती हैं। इन अर्थों में निराला की रचनाएँ साहित्यरूपी सागर में चन्द्रमणी के समान है।''[8]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. छायावाद के दो स्तम्भ : डॉ0 सीता सिंह, साहित्य सेवा प्रकाशन, परमानन्दपुर वाराणसी, प्रकाशन वर्ष 1998, पृ0 44
2. निराला का काव्य : विविध संदर्भ, डॉ0 मालती तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, 15–ए, महात्मा गांधी मार्ग, प्रथम संस्करण–2001, पृ0 62
3. निराला होने का अर्थ और तीन लम्बी कविताएँ, सं0 राजेन्द्र कुमार, अभिव्यक्ति, प्रकाशन, वी0–31, गोविन्दपुर कालोनी, इलाहाबाद, संस्करण–2006, पृ0 72
4. निराला आत्म हन्ता आस्था; दूधनाथ सिंह, लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग, प्रयागराज, प्रथम संस्करण–1972, पृ0 112
5. निराला की साहित्य साधना, राम विलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, प्रा0लि0, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002, संस्करण–1990, पृ0 102
6. छायावाद, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली–110002, प्रथम संस्करण, 1995, पृ0 33

7. प्रसाद निराला, अज्ञेय, प्रो0 रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारतीय प्रकाशन, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद, सातवाँ संस्करण–2014, पृ0 63

8. क्रांतिकारी कवि निराला, बच्चन सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पाँचवाँ संस्करण–2003, पृ0 92